Result Mitra Daily Magazine

स्वेज नहर का निर्माण एवं इतिहास

➢ चर्चा में क्यों ?

➢ आज ही के दिन यानि 17 नवंबर 1869 को "स्वेज नहर" को आधिकारिक तौर पर जहाजों के लिए खोला गया था।

➢ स्वेज नहर :

- स्वेज नहर मिस्त्र में कृत्रिम समुद्र–स्तरीय जलमार्ग है।
- 193 किलोमीटर लंबी यह कृत्रिम जलमार्ग स्वेज के इस्तुमस के माध्यम से अफ्रीका एवं एशिया को विभाजित करते हुए भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़ता है।
- स्वेज नहर एशिया से यूरोप तक की समुद्री मार्ग को 7000 km तक कम कर देता है, जिससे इससे होकर गुजरने वाले जहाजों को अफ्रीका के दक्षिणी सिरे के बीच यात्रा करने की आवश्यकता नहीं होती है।

➢ स्वेज नहर का निर्माण एवं इतिहास :

- स्वेज के माध्यम से यूरोप और एशिया को जोड़ने वाले व्यापार मार्ग का उल्लेख प्राचीन काल के इतिहास में है।

- प्राचीन काल के मिस्त्र क्षेत्र के "फिरौन सेनुस्नेट–III" के शासनकाल के दौरान इस नहर के निर्माण के कुछ सबूत है।
- "फिरौन सेनुस्नेट–III" ने दूसरी सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व में मिस्त्र के क्षेत्र में शासन किया था।
- हालांकि आधुनिक स्वेज नहर का विचार 18वीं शताब्दी के दौरान तब आया, जब यूरोपीय औपनिवेशिक विस्तार अपने चरम पर था।
- 1799 में नेपोलियन ने इस क्षेत्र में नहर बनाने का प्रयास किया था, लेकिन गलत माप के कारण यह सफल नहीं हो पाया।
- सर्वप्रथम 1858 ई. में फ्रांसीसी राजनयिक और इंजीनियर फर्डिनेंड डी लेसेप्स ने स्वेज नहर के निर्माण के समर्थन के लिए मिस्त्र के वायसराय सईद पाशा का समर्थन पत्र हासिल किया।
- स्वेज नहर के निर्माण के लिए समर्थन पत्र हासिल करने के बाद फर्डिनेंड डी लेसेप्स ने स्वेज नहर के निर्माण के लिए वर्ष 1858 में ही स्वेज नहर कंपनी का गठन किया।
- इस स्वेज नहर कंपनी में आधे शेयर फ्रांस के थे, जबकि आधे शेयर तुर्की, मिस्त्र और अन्य अरब देशों के थे।
- 17 नवंबर 1869 को यह स्वेज नहर आधिकारिक रूप से जहाजों के संचालन के लिए खोल दिया गया।
- स्वेज नहर का निर्माण करने वाली "स्वेज कैनाल कंपनी" को 99 वर्षों तक इस नहर के संचालन का काम सौंपा गया था, जिसके बाद यह अधिकार मिस्त्र सरकार को सौंप दिए जाने की बात कही गई।
- इस नहर के निर्माण के बाद मिस्त्र के पूर्व राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासेर ने दावा किया कि इस नहर के निर्माण में 12 लाख से अधिक श्रमिक मारे गए एवं इसके लिए गंभीर वित्तीय कठिनाइयों सहित कई बाधाओं का सामना करना पड़ा।
- आरंभ में स्वेज नहर का उपयोग यूरोपीय शक्तियों द्वारा एशिया और पूर्वी अफ्रीका में अपने समुद्री और औपनिवेशिक हितों को बनाए रखने के लिए किया।
- वर्ष 1888 में इस नहर के संचालन के संबंध में एक अंतर्राष्ट्रीय उपसंधि की गई, जिसके तहत युद्ध और शांति के समय इस नहर से होकर जहाजों का संचालन बिना किसी रोक-टोक से होना था।
- हालांकि वर्ष 1904 में ब्रिटेन ने 1888 की इस उपसंधि को तोड़ दिया एवं इस नहर की निगरानी के लिए अपनी सेनाएं बिठा दी।
- 1936 की संधि के बाद ब्रिटेन ने स्वेज नहर क्षेत्र में विशाल रक्षात्मक बल स्थापित कर दिया।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोपीय साम्राज्य के पतन के फलस्वरूप स्वेज नहर वैश्विक स्तर पर प्रमुख आकर्षण का केंद्र बन गया।

Result Mitra TM

- वर्ष 1951 ई. में ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ मिस्त्र में आंदोलन छिड़ गया, जिसके फलस्वरुप वर्ष 1954 में ब्रिटेन ने मिस्त्र के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किया।
- 1954 में हुई इस संधि के तहत अगले 7 वर्षों में स्वेज नहर क्षेत्र से ब्रिटेन अपने सैनिकों की वापसी के लिए राजी हो गया।
- हालांकि इसी बीच वर्ष 1956 में मिस्त्र के तत्कालीन राष्ट्रपति अब्देल नासेर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया।
- स्वेज नहर के राष्ट्रीयकरण की घोषणा करने के बाद अब्देल नासेर ने घोषणा की कि स्वेज नहर व्यापार मार्ग से प्राप्त राजस्व का उपयोग मिस्त्र नील नदी पर "असवान बांध" के निर्माण के लिए करेगा, जो उनके देश के लिए बिजली पैदा करेगा और बांध के आसपास के क्षेत्र को बाढ़ से बचाएगा।
- मिस्त्र के राष्ट्रपति की स्वेज नहर से संबंधित इस घोषणा के बाद "स्वेज संकट" शुरू हो गया, जिसके कारण ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल ने मिलकर मिस्त्र पर हमला कर दिया।
- इस युद्ध में ब्रिटेन, फ्रांस और इजराइल का गठबंधन सैन्य रूप से सफल रहा, लेकिन मिस्त्र के राष्ट्रवादियों के लिए राजनीतिक रूप से जीत के रूप में समाप्त हुआ।
- अंततः संयुक्त राष्ट्र की पहल पर ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल के सैन्य गठबंधन को पीछे हटना पड़ा तथा स्वेज नहर पर संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना को तैनात कर दिया गया।
- वर्ष 1967 में एक बार पुनः अब्देल नासेर ने संयुक्त राष्ट्र के शांति सेना को बाहर निकलने का आदेश दिया, जिसके फलस्वरूप मिस्त्र और इजरायल के बीच पुन: संघर्ष शुरू हो गया।
- अब्देल नासेर के आदेश के जवाब में इजरायल की सेना ने स्वेज नहर क्षेत्र के सिंचाई पर कब्जा कर लिया, जिसके जवाब में मिस्त्र ने अगले 8 वर्षों के लिए स्वेज नहर क्षेत्र से सभी शिपिंग को बंद कर दिया।
- स्वेज नहर के माध्यम से शिपिंग बंद होने की यह पहली घटना नहीं थी।
- मार्च 2021 में चीन से नीदरलैंड जाने वाली "एमवी एवर गिवेन" नाम का कंटेनर जहाज का इस नहर में फंसने के कारण 6 दिनों तक इस नहर के माध्यम से शिपिंग बाधित रहा, जिसके फलस्वरुप सैकड़ो जहाज फंसे रहे और वैश्विक वाणिज्य बाधित रहा।

➢ स्वेज नहर, एक आर्थिक जीवन रेखा :

- अपने निर्माण के बाद स्वेज नहर पूर्व और पश्चिम के बीच सभी व्यापार के लिए जीवन रेखा बन गई।
- इस नहर के कारण यूरोप से एशिया और पूर्वी अफ्रीका का सरल और सीधा मार्ग खुल गया।

Result Mitra

- स्वेज नहर के खुलने से पूर्वी अफ्रीका, ईरान, अरब देशों, भारत, पाकिस्तान, सुदूर पूर्व एशिया के देशों, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि देशों के साथ व्यापार सुविधाजनक बन गया एवं व्यापार में काफी वृद्धि हुई।
- स्वेज नहर में यातायात कॉन्वाय के रूप में होता है।
- इस नहर से प्रतिदिन तीन कॉन्वाय संचालित होते हैं, जिसमें दो उत्तर से दक्षिण की ओर, तीसरा दक्षिण से उत्तर की ओर संचालित होता है।
- इस नहर में यात्रा की गति 11 से 16 km प्रति घंटे के बीच होती है।
- इस 193 किलोमीटर लंबी नहर को पार करने में जहाजों को औसतन 12 घंटे लगते हैं।
- इस नहर के माध्यम से लिवरपूल से मुंबई आने में 7250 km, हांगकांग आने में 4500 km तथा न्यूयॉर्क से मुंबई पहुंचने में 4500 km की बचत होती है वर्तमान में इस नहर के माध्यम से कुल वैश्विक व्यापार का लगभग 12% व्यापार होता है।
- विश्व के कुल कच्चे तेल व्यापार का 7% तथा दैनिक कंटेनर यातायात का 30% इस नहर के माध्यम से गुजरता है।
- स्वेज नहर के माध्यम से प्रतिदिन लगभग 20,000 से अधिक जहाज गुजरते हैं।
- मार्च 2021 में इस नहर में आई 6 दिनों की व्यापार रुकावट ने वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति को बढ़ावा दिया।
- कुछ अनुमानों के अनुसार, इस रुकावट के दौरान प्रत्येक घंटे विलंबित माल का मूल्य लगभग 400 अमेरिकी डॉलर था।

➢ स्वेज नहर से व्यापार :

- स्वेज नहर मार्ग से फारस की खाड़ी के देशों से खनिज तेल, भारत और अन्य एशियाई देशों से अभ्रक, लौह अयस्क, मैंगनीज, चाय, कहवा, जूट, रबड़, कपास, ऊन, मसाले, चीनी, चमड़ा, सागवान की लकड़ी और सूती वस्त्र पश्चिमी यूरोपीय देशों तथा उत्तरी अमेरिका को भेजी जाती है।

Result Mitra